IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"भावी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन"

"A Study Of Emotional Intelligence Of Prospective Teachers"

***Sunita Soni, **Dr.Usha Rathore**

*Rsearch Scholar, Department of Education, HBUTT College, MDS University, Ajmer, Rajasthan, India

**Research Guide, Department of Education, HBUTT College, MDS University, Ajmer, Rajasthan, India

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य भावी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना है। भावी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का आकलन करने से अन्य शिक्षकों को प्रेरणा प्रदान की जा सकती है। इस हेतु शोधार्थी ने शोध के मुख्य उद्देश्य में भावी शिक्षकों में छात्रध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु निर्धारित शून्य परिकल्पनाओं के परीक्षण में संवेगात्मक बुद्धि के उपकरण का प्रयोग किया है। इसका प्रशासन बी.एड. एवं डी.एल.एड. स्तर के भावी शिक्षकों में राजस्थान के पाली जिले से 320 प्रशिक्षणार्थियों पर किया गया। प्रमुख सम्प्राप्तियों में पाया कि भावी शिक्षकों में छात्रध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नही है। आँकड़ो के सकंलन हेतु संवेगात्मक बुद्धि का मापन – डॉ. एस. के. मंगल एवं श्रीमती शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित मापनी का उपयोग किया गया है। प्रदत्तो के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी–मान, क्रान्तिक अनुपात मान, सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

मुख्य शब्दावली : भावी शिक्षक, बी.एड., डी.एल.एड., संवेगात्मक बुद्धि।

प्रस्तावना :

मानव जीवन में शिक्षा का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह न केवल ज्ञानार्जन का साधन है, बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, समाज की उन्नति और राष्ट्र की प्रगति का आधार भी है। शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी प्रदान करना नहीं है, बल्कि ऐसे नागरिक तैयार करना है जो नैतिक, बौद्धिक और भावनात्मक दृष्टि से परिपक्व हों।

शिक्षा मानव जीवन के विकास की आधारशिला है। यह न केवल ज्ञान, कौशल एवं बौद्धिक विकास को बढ़ावा देती है, बल्कि व्यक्ति के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा का उद्देश्य केवल शैक्षणिक योग्यता अर्जित करना ही नहीं है, बल्कि जीवन मूल्यों, नैतिकता, सामाजिकता और भावनात्मक संतुलन को भी विकसित

करना है। वर्तमान से आधुनिक युग में, जहाँ ज्ञान और तकनीक का तेजी से विस्तार हो रहा है, वहीं शिक्षा के क्षेत्र में संवेगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence) का महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है।

भावनाएँ मानव जीवन का अभिन्न अंग हैं। ये न केवल हमारे विचारों और निर्णयों को प्रभावित करती हैं, बल्कि हमारे व्यवहार, संबंधों और सफलता में भी अहम भूमिका निभाती हैं। पारंपरिक रूप से यह माना जाता रहा है कि बौद्धिक क्षमता (IQ) ही सफलता का प्रमुख निर्धारक है, परंतु आधुनिक मनोविज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि केवल बौद्धिक क्षमता ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि संवेगात्मक बुद्धि (EI) भी जीवन में सफलता और संतुलन के लिए अनिवार्य है। **डैनियल गोलेमन** (Daniel Goleman) द्वारा लोकप्रिय किया गया **यह सिद्धांत बताता** है कि संवेगात्मक बुद्धि में व्यक्ति की भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने, दूसरों की भावनाओं को पहचानने और उनसे सकारात्मक संबंध स्थापित करने की क्षमता सम्मिलित होती है।

मानव जीवन एक जटिल सामाजिक और भावनात्मक संरचना है, जहाँ विचारों, भावनाओं और व्यवहारों का आपसी संबंध व्यक्ति के जीवन की दिशा और गुणवत्ता को निर्धारित करता है। शिक्षा को सामान्यतः – ज्ञान और कौशल प्रदान करने वाली प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, किंतु वास्तविकता में शिक्षा का उद्देश्य इससे कहीं व्यापक है। शिक्षा व्यक्ति को न केवल बौद्धिक रूप से सक्षम बनाती है, बल्कि उसके भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास को भी सुनिश्चित करती है।

शिक्षक इस प्रक्रिया का सबसे महत्त्वपूर्ण स्तंभ है। कहा भी गया है कि "A teacher is a nation builder"।

21वीं शताब्दी के जटिल सामाजिक और तकनीकी परिदृश्य में शिक्षक की भूमिका और भी विस्तृत हो गई है। वह केवल ज्ञान संप्रेषक नहीं बल्कि भावी शिक्षकों का **मार्गदर्शक, प्रेरक** और **चरित्र–निर्माता** है। भविष्य में शिक्षक बनने वाले विद्यार्थियों को हम **"भावी शिक्षक"** कहते हैं। ये शिक्षक–शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत रहते हैं और उनके व्यक्तित्व, दृष्टिकोण तथा कौशल का विकास वहीं से होता है।

शिक्षक इस प्रक्रिया का केंद्र बिंदु है। शिक्षक का कार्य केवल जानकारी का संप्रेषण नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना है। विशेष रूप से भावी शिक्षक अर्थात् वे छात्र जो शिक्षक बनने के लिए प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं, उनकी भूमिका शिक्षा की गुणवत्ता और समाज के भावी स्वरूप को निर्धारित करने में अहम है। ऐसे में भावी शिक्षकों के लिए केवल विषय ज्ञान और शिक्षण कौशल पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनके पास उच्च स्तर की संवेगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence) भी होना आवश्यक है।

इस संदर्भ में संवेगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence - EI) का महत्व बढ़ जाता है। यह बुद्धि व्यक्ति को अपनी भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने और दूसरों की भावनाओं के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करने की क्षमता प्रदान करती है। आधुनिक शोध यह प्रमाणित कर चुके हैं कि केवल बौद्धिक बुद्धि (IQ) ही सफलता की गारंटी नहीं है, बल्कि संवेगात्मक बुद्धि (EQ) उससे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। विशेष रूप से शिक्षण–प्रशिक्षण के क्षेत्र में, जहाँ शिक्षक को विभिन्न पृष्ठभूमियों से आए विद्यार्थियों से संवाद करना होता है, वहाँ संवेगात्मक बुद्धि का स्तर निर्णायक भूमिका निभाता है।

प्रस्तुत शोध का मुख्य लक्ष्य है कि बी.एड. एवं डी.एल.एड. स्तर के भावी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करके अन्य सामान्य विद्यार्थियों के लिए एक मार्गदर्शक का कार्य प्रस्तुत कर सके।

समस्या कथन :–

"भावी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन"

"A Study of Emotional Intelligence of Prospective Teachers"

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. भावी शिक्षकों में छात्रध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ :–

1. भावी शिक्षकों में छात्रध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अध्ययन का क्षेत्र एवं न्यादर्श :

समष्टि में शोधार्थी द्वारा न्यादर्श में राजस्थान राज्य में शोध कार्य के लिए राजस्थान के पाली जिले के भावी शिक्षकों के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के छात्रध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं को शामिल किया है। शोधार्थी द्वारा न्यादर्श हेतु सर्वप्रथम पाली जिले के भावी शिक्षकों के छात्रध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में अध्ययनरत् लगभग 320 प्रशिक्षणार्थियों को न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि का प्रयोग इसलिए किया गया क्योंकि इसका यह अभिप्राय है कि हमें निश्चित चयन विधि पर विश्वास करना है यही यादृच्छिक कहलाती है जो बहुत बड़े समूह या जनसंख्या को बिना किसी पक्षपात के उपलब्ध करा सके। इसलिए शोधार्थी ने यादृच्छिक विधि का प्रयोग करके न्यादर्श का चयन किया।

शोध की विधि एवं प्रक्रियाएं :

शोध की प्रकृति व सर्वेक्षण विधि की उपयोगिता के आधार पर शोधार्थी ने प्रस्तुत अनुसंधान में आँकड़ों के एकत्रीकरण हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण संवेगात्मक बुद्धि – डॉ. एस. के. मंगल एवं श्रीमती शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया है। अध्ययन में प्रयुक्त सर्वेक्षण विधि तथा मानकीकृत उपकरण का चयनित विद्यार्थियों पर प्रशासन करना एक महत्वपूर्ण सोपान है। इस हेतु पाली जिले में स्थित भावी शिक्षकों के महाविद्यालयों के संस्था प्रधानों (प्राचार्य/प्राचार्या) से शोधार्थी द्वारा व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क किया गया। उन्हें शोधकार्य के उद्देश्य से अवगत करवाया और उपकरण के प्रशासन की अनुमति प्राप्त की गई। तत्पश्चात् निर्देशित कक्षा में जाकर उपकरणों में दिये गये निर्देशों की अक्षरशः पालना करते हुए डॉ. एस. के. मंगल एवं श्रीमती शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित मापनी का प्रशासन किया गया। तत्पश्चात् इन उपकरण की जाँच अंकन योजना के अनुसार की गई। इस प्रकार उपकरण की सहायता से प्रदत्तों एवं सूचनाओं को एकत्रित किया गया तथा उन्हें व्यवस्थित, वर्गीकृत व सारणीबद्ध किया गया। इन आंकड़ों का विश्लेषण व व्याख्या प्रस्तुत की गई है। परीक्षणों के मूल प्राप्तांको का विश्लेषण करने हेतु मध्यमान (N), प्रमाप विचलन (SD) एवं टी–मान, क्रान्तिक अनुपात मान (CR–Value), की गणना की गई।

परिकल्पनाएँ सं. 1– भावी शिक्षकों में छात्रध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

तालिका

मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि मध्यमानों का अन्तर, स्वतंत्रता के अंश तथा आलोचनात्मक अनुपात का प्रदर्शन

भावी शिक्षक	N	M	SD	SED	D	df	C.R.
xzkeh.k	160	118-40	18-08	2-00	6-07	318	3-34
'kgjh	160	111-70	17-77				

'' 0ण05 **सार्थक स्तर**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हैं कि भावी शिक्षकों में छात्रध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि के प्राप्तांकों की गणना के आधार पर भावी शिक्षकों में ग्रामीण क्षेत्र के प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 118.40 तथा शहरी क्षेत्र के प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 111.70 प्राप्त हुआ एवं ग्रामीण क्षेत्र के प्रशिक्षणार्थियों का प्रमाप विचलन 18.08 तथा शहरी क्षेत्र के प्रशिक्षणार्थियों का प्रमाप विचलन 17.77 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों एवं प्रमाप विचलनों के आधार पर गणना की गई है जिसमें क्रान्तिक अनुपात मान 3.34 प्राप्त हुआ। जो कि सार्थकता स्तर 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता का मान 1.96 गणना द्वारा प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान सार्थकता स्तर के मान से अधिक है। अतः उक्त परिणाम के आधार पर परिकल्पना–1 ''भावी शिक्षकों में छात्रध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया है।'' अतः परिकल्पना–1 को अस्वीकृत किया जाता है।

ग्राफ

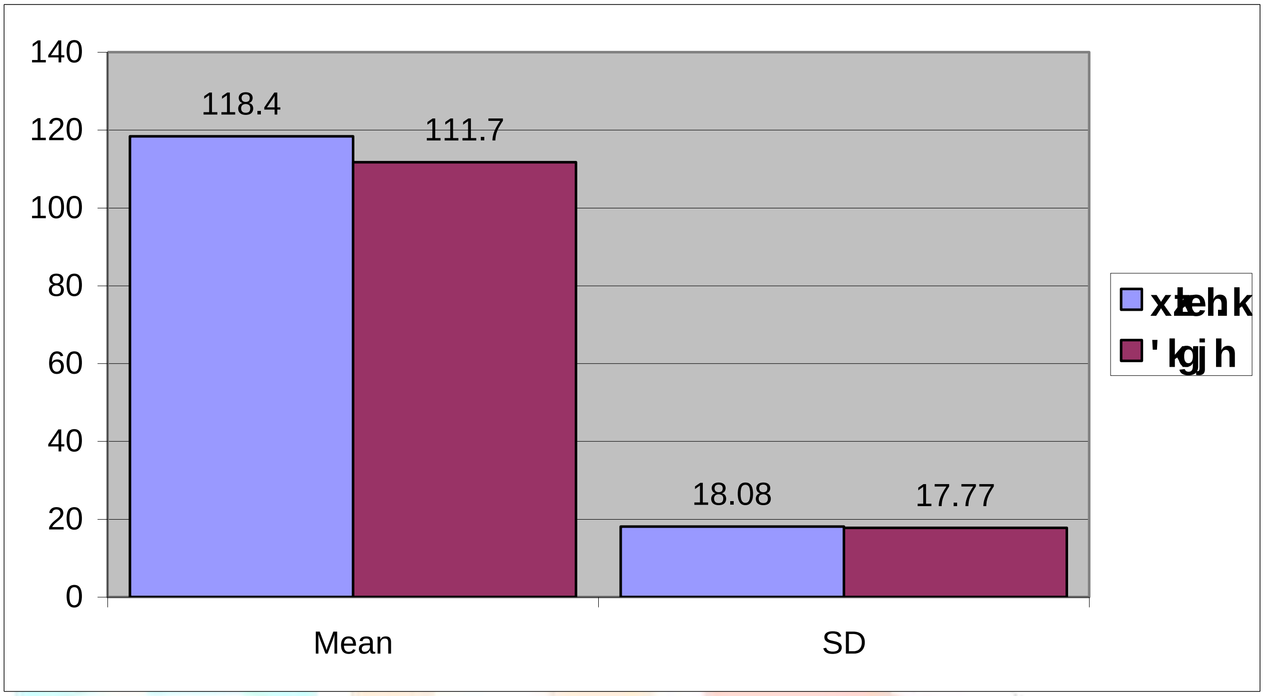

हिन्दी संदर्भ साहित्य

- **अग्रवाल, एस. (2018)** शैक्षिक मनोविज्ञान. नई दिल्लीः विनोद पब्लिकेशन।
- **अरोड़ा, पी. (2020)** संवेगात्मक बुद्धि और शिक्षण प्रक्रिया. जयपुरः आर.पी.एच. पब्लिशर्स।
- **भटनागर, आर. (2019)** अधिगम और शिक्षण का मनोविज्ञान. नई दिल्लीः अटल पुस्तक सदन।
- **चौधरी, एम. (2021)** शिक्षक–प्रशिक्षण के सिद्धांत. जयपुरः राज. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- **देवी, एस. (2017)** व्यक्तित्व विकास और संवेगात्मक दक्षता. वाराणसीः ज्ञानमंडल।
- **गौतम, एस. (2022)** संवेगात्मक बुद्धि का शैक्षिक उपयोग. नई दिल्लीः अयान प्रकाशन।
- **गुप्ता, ए. (2015)** आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान. मुंबईः यूनिवर्सिटी प्रकाशन।
- **जोशी, डी. (2018)** शैक्षिक व्यवहार और कक्षा प्रबंधन. दिल्लीः सुभाष प्रकाशन।
- **कुमार, आर. (2020)** संवेगात्मक बुद्धिः सिद्धांत एवं व्यवहार. इलाहाबादः भारतीय मनोविज्ञान प्रकाशन।
- **मिश्रा, एन. (2014)** शिक्षा में मूल्य एवं मानव विकास. नई दिल्लीः नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
- **माथुर, वी. (2016)** तनाव प्रबंधन एवं संवेगात्मक कौशल. जयपुरः सूरज पब्लिकेशन।
- **मेहता, ए. (2019)** शैक्षिक नेतृत्व, प्रबंधन और भावनात्मक दक्षता. भोपालः मधुर प्रकाशन।